

मूहि नरु ॥

यव धान्य लोडा समिध गु
अदन धीरु लद अदन
वदजीरु लधियमु समुख
धनयुष्य धनतिल ककुनि
लनक तिल रुकट रुकुला
इयक शन यन्न कं शन चन्द
नगुति गुगुलि सर्वा वधीनी
कंद मूल रुल यक्षान्न वंश
दूर्वा कन यय सा नृक्षारुच
शनैश्च याग ॥

वाक्मज्जनसं कल्प ॥ दिग
वर्णी ॥ वलि यूजा ॥ उं डो ॥ शांति ॥
युगदी यव किंका ॥ नृक्षारु
वशनैश्च याग ॥

उं मय न्नायं यय शमनाय
इ ४ यय शमनाय यय श
वद ४ यय शमनाय यय श

不

[illegible]

ऊँलासनयाव कन्याया लारु
गवा ऊँलाव ददन कन्या
दानविय दानवा क॥ वाक्
॥ स्यिय उय ॥ अयवा लारु
कल्य ल्यादि ॥ १ क साव स्व ॥
वृयत्व ससया ग क ना नी
विवा रु रु ल द ॥ धेव प्रनिगृ
ही ध सा त्त ऊँ ॥ सया गा सि रु
ध दारि १ क न्या ॥ गुरु गु ॥ नि
गी ॥ न स्ये प्र द रु व दार्क ॥ उर्य
रु व रु ल प्र द ॥ १ न स्र व ॥
क सा वा य साल का व ॥ स रु
क न्या दानं पु र्य स रु स प्र रु द ॥

ध न ध न ला व सासन सि सार्थ
कादिन द द धा व ल र व धा व
ला य क ॥ व द ॥ ॐ अ ॥ न य
त्वा स र्क व व ॥ ॥ द द द द सा स
गत्व स गी य या य द्वा म य धि
सया स र्क प्र नि गृ ही न ॥ य द

यत्वा य स र्क व व ॥ ॥ द द द द
सा स गत्व स गी य या ॥ ॥ द द द
य धि स या स र्क प्र नि गृ ही रु
॥ व रु ल य ग यत्वा स र्क व व ॥
द द द द सा स गत्व स गी य य
ग्दा ग य धि स या स र्क प्र नि
गृ ही रु ॥ य सा यत्वा स र्क व व
॥ ॥ द द द द सा स गत्व स गी य
रु या द ग य धि स या स र्क प्र
नि गृ ही रु ॥ ॐ का द ग क स
द द ग ॥ ॐ का स का स ध ॥

क न्या दान प्र नि द्वा र्थ न स्र व
॥ ॥ द द द ॥ ॥ स प्र द द ॥ वा व ना
दि अ रु वि व व क न्या दान वि
॥ ॥ स ॥ ॥ य द न सि द व य यी
जा ॥ द द ॥ ॐ यी द्या य स्या य
॥ का स र व उ र वी न त्रि व द ॥
ॐ क न्या ॥ व व रु रु स न वा
उ अ र्क ॥ ज न रि वा क ॥ नि

।यमुसासंस्तुयतेयमुयस्तु
 गस्तुधामाजुक्तिगतिवक्त॥ ॥
 धनकन्यादानविधि॥ ॥

तत्तालाजाहोम॥ कलासववा
 गयावकन्यानदयसक्त॥
 ॐ अयमसंस्तुयतेयमुयस्तु
 यस्तु॥ सनोयसादव॥
 नासंवदुसायतस्याह॥ १ ॥
 यस्तुसंस्तुयतेयमुयस्तु॥
 ॐ यदक्रिण॥ सास्यउयाव
 कस्तु॥ ॐ सुखावधिनम्भ
 ॥ यंकलिकानवन॥
 ॐ उरुसंस्तुयतेयमुयस्तु
 तुनासह॥ यन॥ यनित्याजा
 यदिग्नियुक्तन्यासह॥ यवि
 नअनिनिस्वाय॥ ॐ गिवाना
 सासि॥ यंकलिसुक्तन्यासा
 नद्याय॥ ॐ गववाय॥ यन॥
 जाहोसस्तु॥ ॐ ॐ यनार्य

चदमसंसादा॥

ॐ दं चदमसं॥

वृक्षालाद्यादि॥ ए॥

नगरं यं यं दोम॥

उं हं सादा॥ ॐ दं हं॥

उं रुवं सादा॥ ॐ दं रुव॥

उं स्वं सादा॥ ॐ दं स्व॥

उं त्वं नाग्नं वृक्षं सा विद्या

यं वसादं अश्वं वयासिमी

ष्टा॥ यजिष्ठं वक्रिणम॥

सूत्राणां विष्णुं दं वा॥ ॥ सिधु

मूम्यस्यागा॥

ॐ दं मग्निं वृक्षं सा॥

उं सर्वं नाग्नं वसादं

लोणीनदिष्टां नृणां उवसा

वृक्षं नृणां वयं दानां वृक्षं

नृणां वयं दानां वृक्षं

ॐ सरुधानश्च॥

ॐ दं मग्निं वृक्षं सा॥

उं नृणां वयं दानां वृक्षं

नृणां वयं दानां वृक्षं

॥ नृणां वयं दानां वृक्षं

॥ नृणां वयं दानां वृक्षं

ॐ दं मग्निं वृक्षं सा॥

उं नृणां वयं दानां वृक्षं

नृणां वयं दानां वृक्षं

नृणां वयं दानां वृक्षं

विष्णुं दं वा॥ ॥ सिधु

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ दं वृक्षं सा॥

कर्मणां विष्णुं दं वा॥

नृणां वयं दानां वृक्षं

उं नृणां वयं दानां वृक्षं

सदवाधर्मं विमक्ष्यते

य॥ नृणां वयं दानां वृक्षं

नवानागसाश्रुदिगथस्यामा॥
 ॐ देव नृणां यादियाया॥
 संश्रवन् यन्मयजागनिधाय॥
 गणयति दुर्गा स्वस्वमकुण्डाद्यु
 नादुर्गिदद्यात्॥
 ॐ सकलश्रुतिगि॥
 युगादुर्गिदद्यात्॥
 आदिवाक्यवतर्पनी॥
 ॐ प्रत्यक्षं नक्षत्रि॥
 युतर्पनी॥ आदुर्गिदद्यात्॥
 आर्जुनी॥ यवादुर्गिदद्यात्॥
 पुनरुत्तुदधि समिधुष्टी
 कलशायाम्बुदनीयूकन
 यजमानदक्षनश्रावार्थम
 मयथ॥ गायत्रीजय॥
 ॐ ॐ देवदुर्गिदद्यात्॥ यजननभ
 श्रुदुष्टावीन० सर्वगण
 स्वस्त्य॥ आत्मसन्निधुजा
 सन्निधु सन्निधु कस्य

रुचसनि॥ श्रुति० यजोव
 दूलीभक्त्यावर्तयथावता
 श्रुत्वा सुधरु॥
 यजमानदक्षननमस्कृत्य॥
 नतमिलादुर्गिदद्यात्॥
 गणयति दुर्गा स्वस्वमकुण्डाद्यु
 गिलादुर्गिदद्यात्॥ कलश
 प्रणिष्टा॥ संश्रुदुर्गिदद्यात्॥
 गदक्ष॥ यथानिमित्तिकम
 कुर्यात्॥ यजमानप्रणिष्टा॥
 गगं॥ किं कादुर्गिदद्यात्॥
 ॐ श्री०॥ निवक्तुविदु०॥ कि
 यथिवी॥ किं नाय०॥ किं
 यथय०॥ किं॥ वनस्यानय
 ०॥ किं वि०॥ यदवा०॥ किं
 क०॥ किं०॥ सर्व०॥ किं०॥
 किं व०॥ किं०॥ सामा०॥ कि
 व०॥ ॥०॥ किं व०॥
 ॐ शुभं कुर्यात्॥ यजमानदक्ष